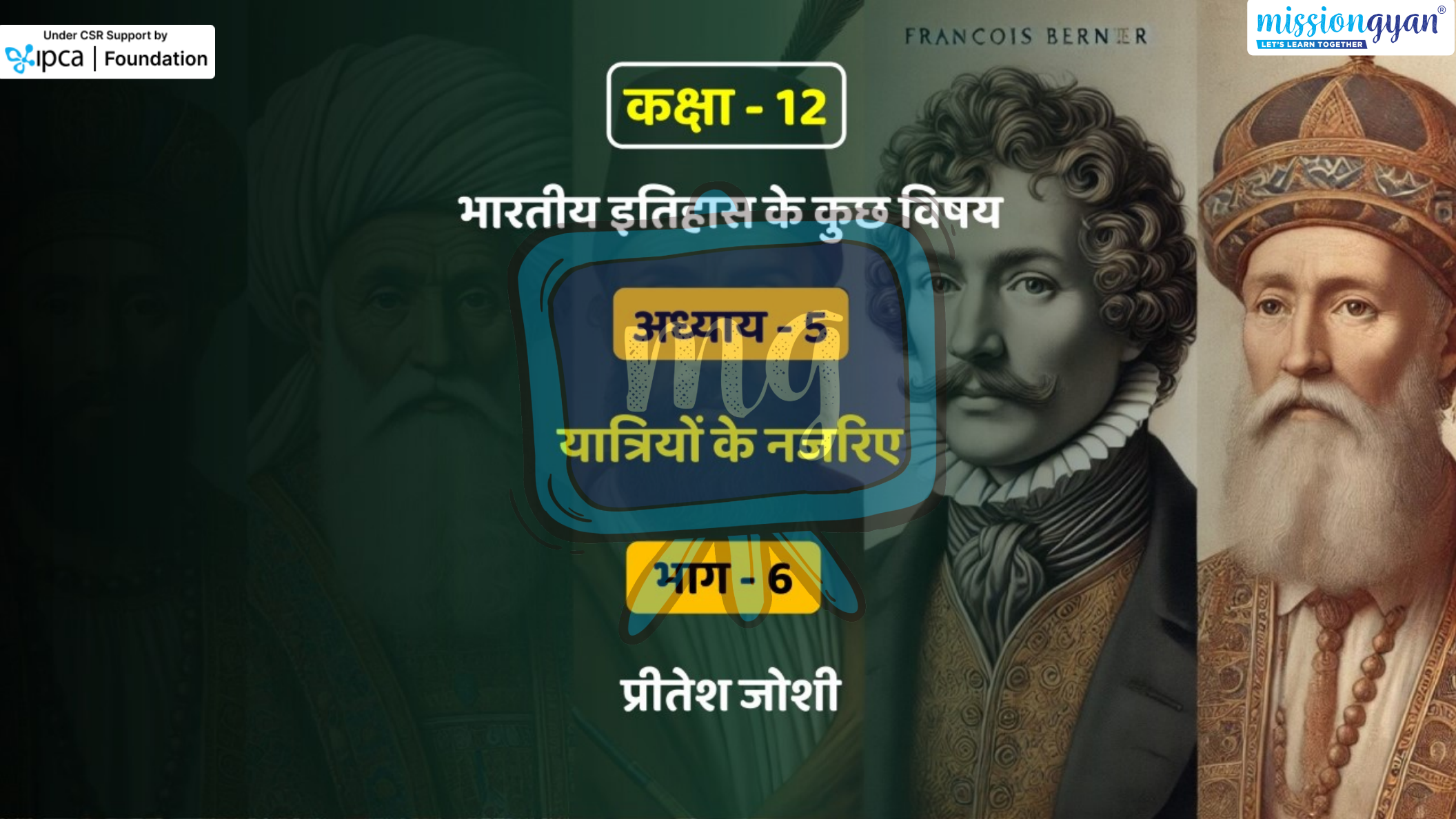
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

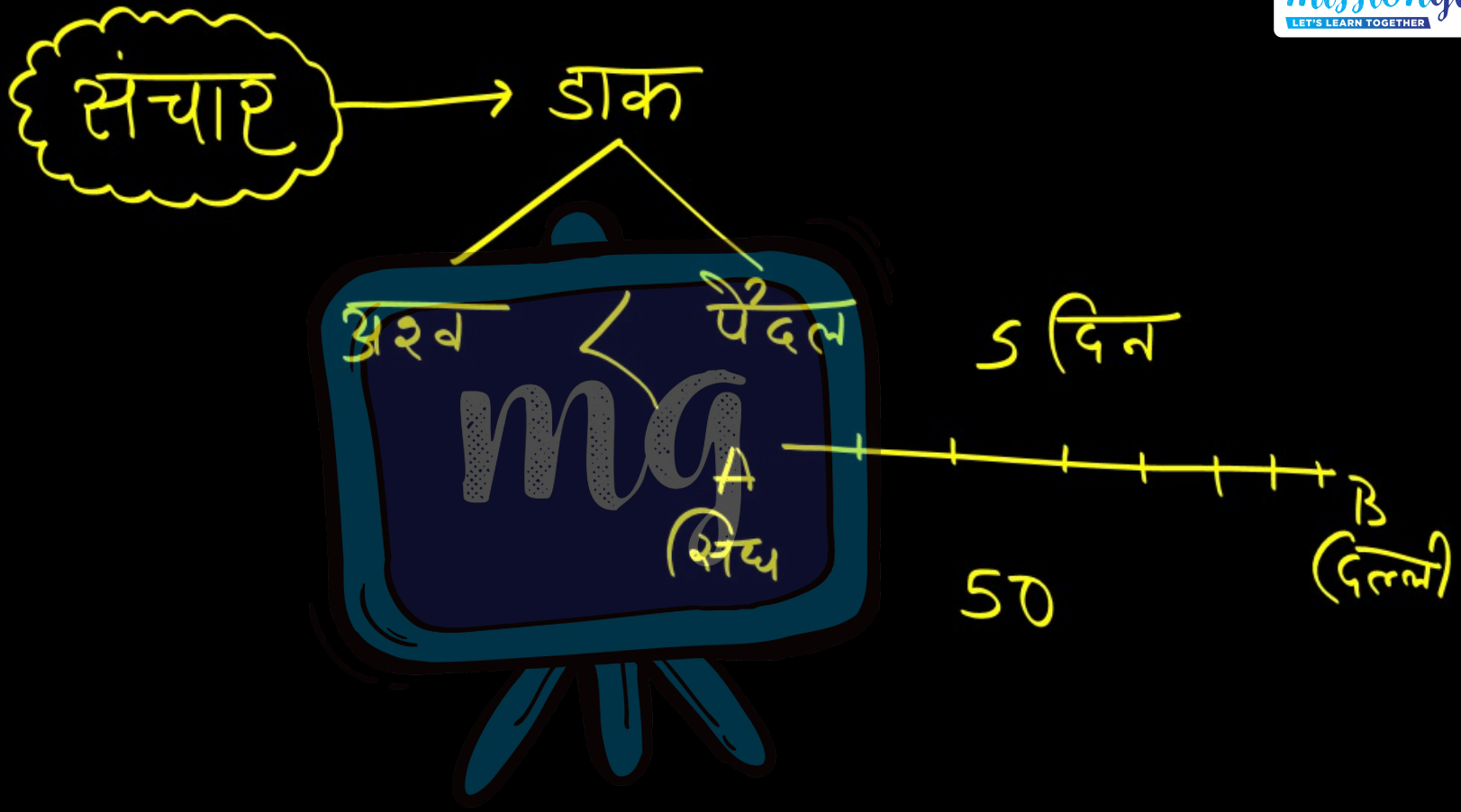
यात्रियों के नजरिए

भाग - 6

प्रीतेश जोशी

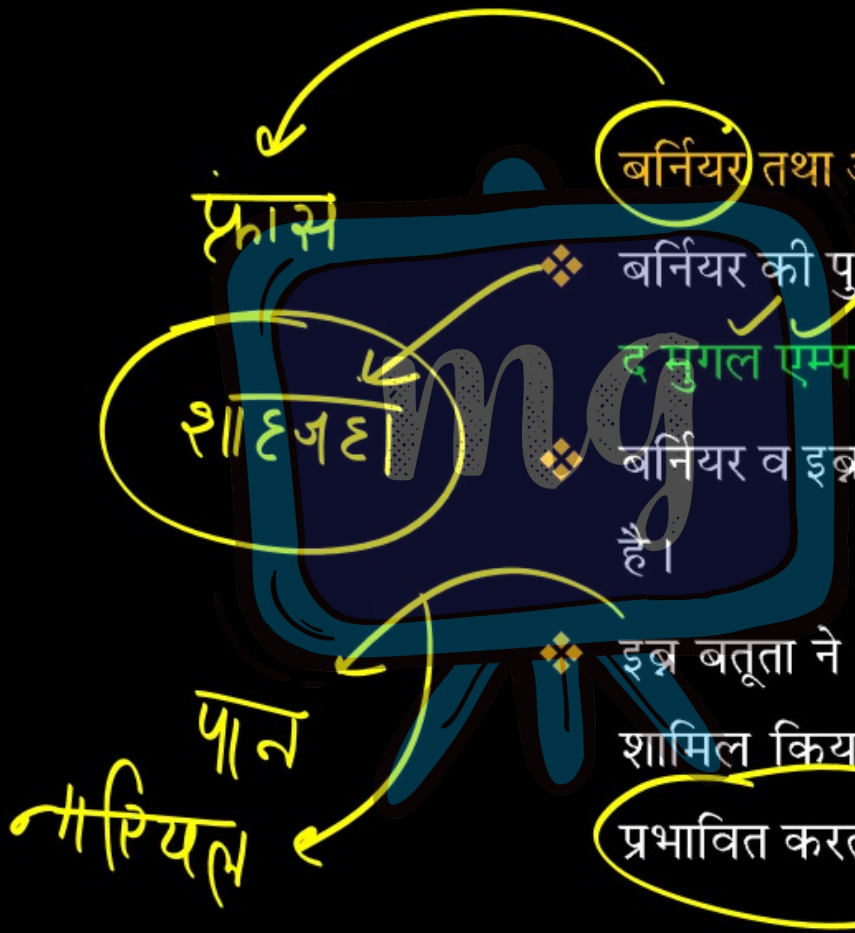
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बर्नियर तथा अपविकसित पूर्व :- भारत

- बर्नियर की पुस्तक/यात्रा वृत्तान्त : "ट्रेवॅल्स इन द मुगल एम्पायर"
- बर्नियर व इब्न बतूता के वर्णन में मूलभूत अन्तर है।
- इब्न बतूता ने अपने वर्णन में हर उस चीज को शामिल किया है जो अनूठेपन के कारण उसे प्रभावित करती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

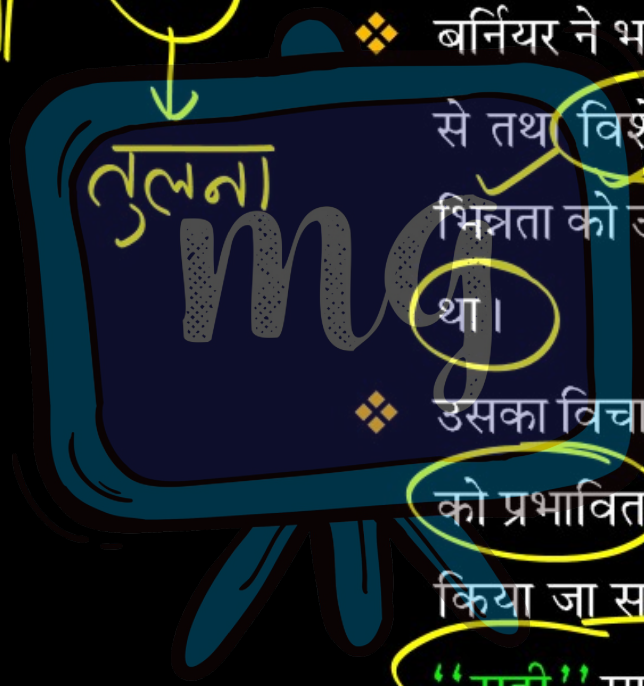
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इब्नबतूता || बे

↓

रोचक

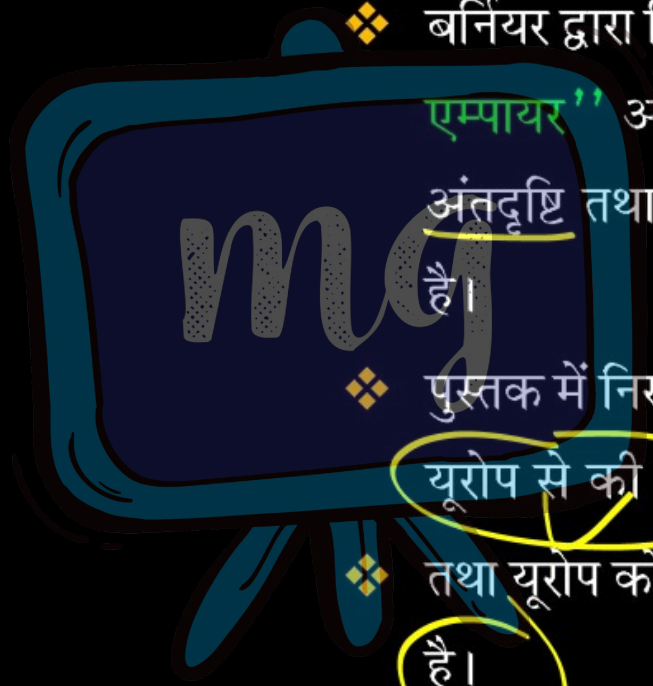
व. इ॥ब



- बर्नियर ने भारत में जो देखा उसकी तुलना यूरोप से तथा विशेष रूप से फ्रांस से करता था तथा भिन्नता को उजागर करने में अधिक रूचि रखता था।
- उसका विचार नीति-निर्माताओं तथा बुद्धिजीवियों को प्रभावित करने का था जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे ऐसे निर्णय ले जिन्हें वह "सही" मानता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- बर्नियर द्वारा लिखित ग्रन्थ "ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर" अपने गहन प्रेक्षण, आलोचनात्मक अंतदृष्टि तथा गहन चिन्तन के लिए उल्लेखनीय है।
- पुस्तक में निरन्तर मुगलकालीन भारत की तुलना यूरोप से की जाती रही है।
- तथा यूरोप को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बर्नियर के वर्णन में भारत को यूरोप के "प्रतिलोम" के रूप में दिखाया गया है या फिर यूरोप का 'विपरीत' जैसा।
- उसका सम्पूर्ण वर्णन इस प्रकार का है कि पश्चिमी दुनिया को भारत निम्न कोटि का प्रतीत होता है ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. इब्नबतूता और बर्नियर के वृतान्त में अंतर स्पष्ट करें?

Q. बर्नियर के अनुसार हम भारत को कैसे देख सकते हैं?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



भूमि स्वामित्व का प्रश्न :-

- बर्नियर के अनुसार भारत व यूरोप के बीच मूल भिन्नताओं में से एक भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव था।
- उसका निजी स्वामित्व के गुणों में दृढ़ विश्वास था।
- वह भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य व निवासियों दोनों के लिए हानिकारक मानता था।
- उसके अनुसार मुगल साम्राज्य में सम्राट सारी भूमि का स्वामी था जिसे वह अमीरों को बांटता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इससे अर्थव्यवस्था और समाज के लिए अनर्थकारी परिणाम होते थे।
- बर्नियर के अनुसार राजकीय भू-स्वामित्व के कारण भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे।
- इसी कारण उत्पादन स्तर को बनाये रखने व बढ़ोत्तरी के प्रति उदासीन रहते थे।
- भूमि के रख-रखाव व बेहतरी का प्रयास नहीं हो पाया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

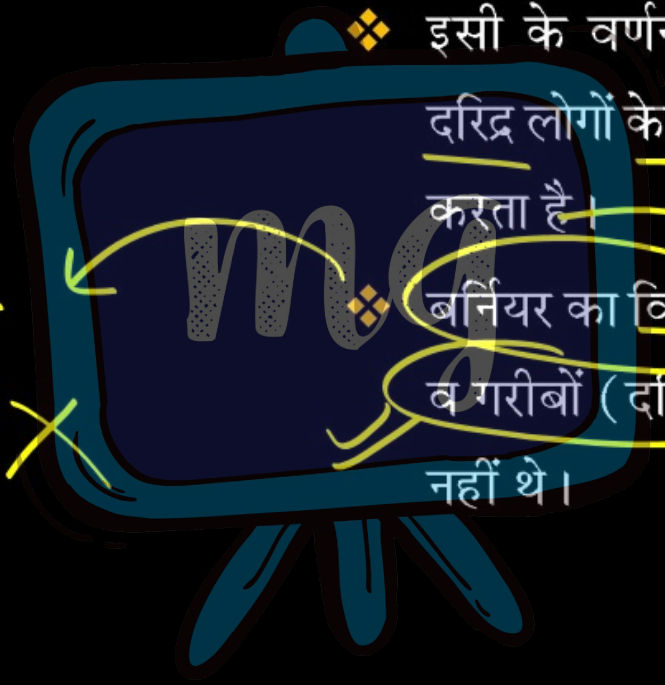
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इस प्रकार निजी भूस्वामित्व के अभाव ने बेहतर भूधारकों के वर्ग के उदय को रोका जो भूमि के रखरखाव व बेहतरी के प्रति सजग रहते।
- इसी के चलते कृषि का समान रूप से विनाश होता गया।
- किसानों का असीम उत्पीड़न।
- समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में लगातार पतन की स्थिति उत्पन्न हुई सिवाय शासक वर्ग के।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

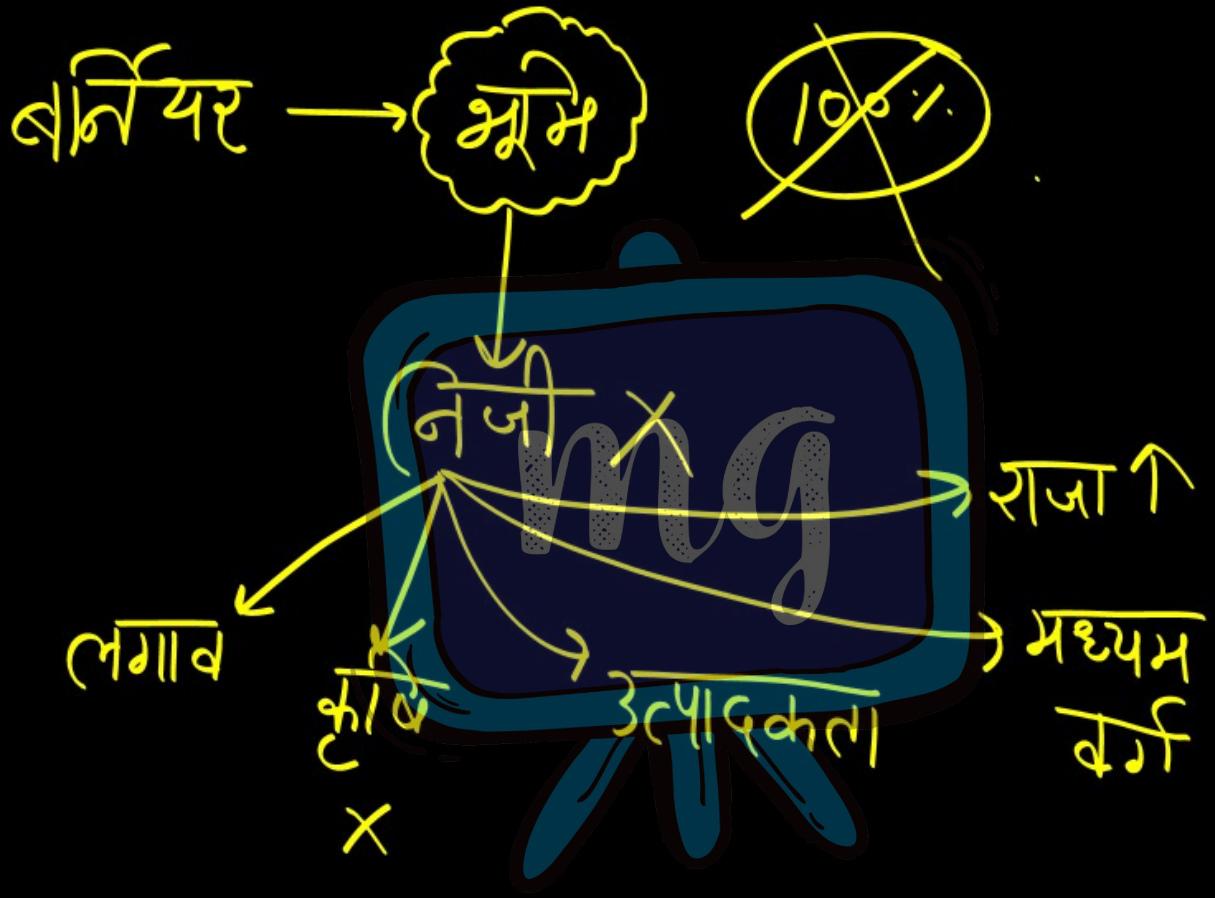


- इसी के वर्णन में बर्नियर भारतीय समाज को दरिद्र लोगों के समरूप जनसमूह के रूप में वर्णित करता है।
- बर्नियर का विश्वास था कि भारत में बहुत अमीर व गरीबों (दरिद्रों) के मध्य की स्थिति के लोग नहीं थे।

मध्यम वर्ग ✗

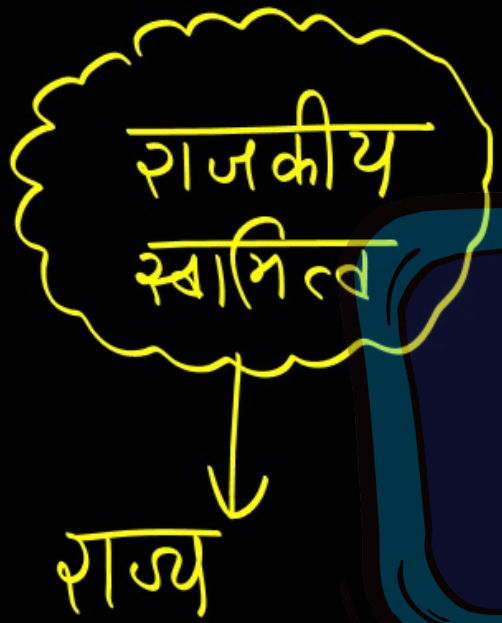
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बर्नियर मुगल साम्राज्य के बारे में लिखता है कि-

- इनका राजा "भिखारियों व क्रूर लोगों" का राजा था।
- इनके शहर विनष्ट तथा खराब हवा से दूषित थे।
- खेत "झाड़ीदार" व "घातक दलदल" से भरे थे।
- इन सभी का एक मात्र कारण "राजकीय स्वामित्व" था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



ग़रीब किसान

यहाँ बर्नियर द्वारा ग्रामीण अंचल में कृषकों के विषय में दिए गए विवरण से एक उद्धरण दिया जा रहा है:

हिंदुस्तान के साम्राज्य के विशाल ग्रामीण अंचलों में से कई केवल रेतीली भूमियाँ या बंजर पर्वत ही हैं। यहाँ की खेती अच्छी नहीं है और इन इलाकों की आबादी भी कम है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपजाऊ

श्रमिक

यहाँ तक कि कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा भी श्रमिकों के अभाव में कृषि विहीन रह जाता है इनमें से कई श्रमिक गवर्नरों द्वारा किए गए बुरे व्यवहार के फलस्वरूप मर जाते हैं। गरीब लोग जब अपने लोभी स्वामियों की माँगों को पूरा करने में असमर्थ हो जाते हैं तो उन्हें न केवल जीवन-निर्वहन के साधनों से वंचित कर दिया जाता है, बल्कि उन्हें अपने बच्चों से भी हाथ धोना पड़ता है, जिन्हें दास बना कर ले जाया जाता है।

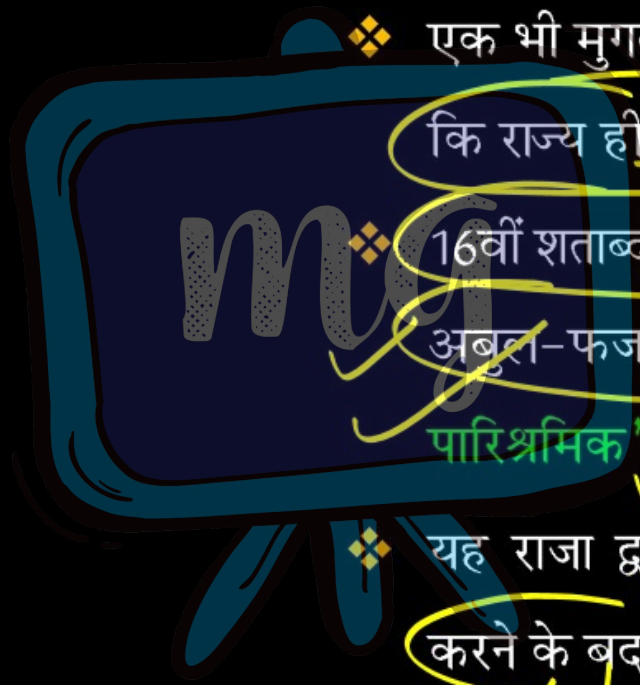
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इस प्रकार ऐसा होता है कि इस अत्यंत निरंकुशता से हताश हो किसान गाँव छोड़कर चले जाते हैं। इस उद्धरण में बर्नियर राज्य और समाज से संबंधित यूरोप में प्रचलित तत्कालीन विवादों में भाग ले रहा था, और उसका प्रयास था कि मुग़ल कालीन भारत से संबंधित उसका विवरण यूरोप में उन लोगों के लिए एक चेतावनी का कार्य करेगा जो निजी स्वामित्व की "अच्छाइयों" को स्वीकार नहीं करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

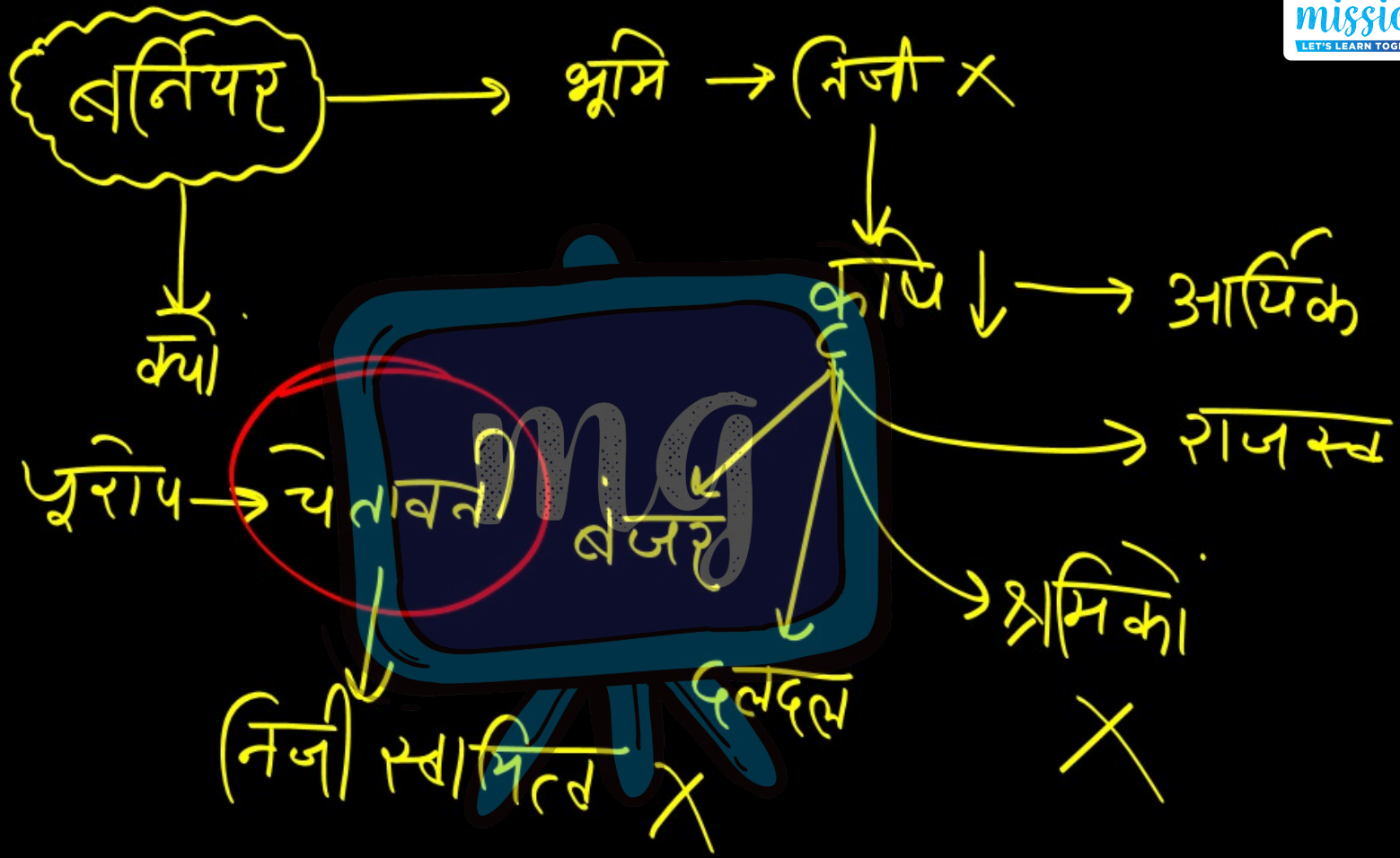
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- एक भी मुगल दस्तावेज यह सूचित नहीं करता कि राज्य ही भूमि का मात्र स्वामी था।
- 16वीं शताब्दी में अकबर का सरकारी इतिहाकार अबुल-फजल भूमि राजस्व को "राजत्व का पारिश्रमिक" बताता है।
- यह राजा द्वारा अपनी प्रजा को सुरक्षा प्रदान करने के बदले की मांग लगती है, न कि "भूमि पर लगान"।

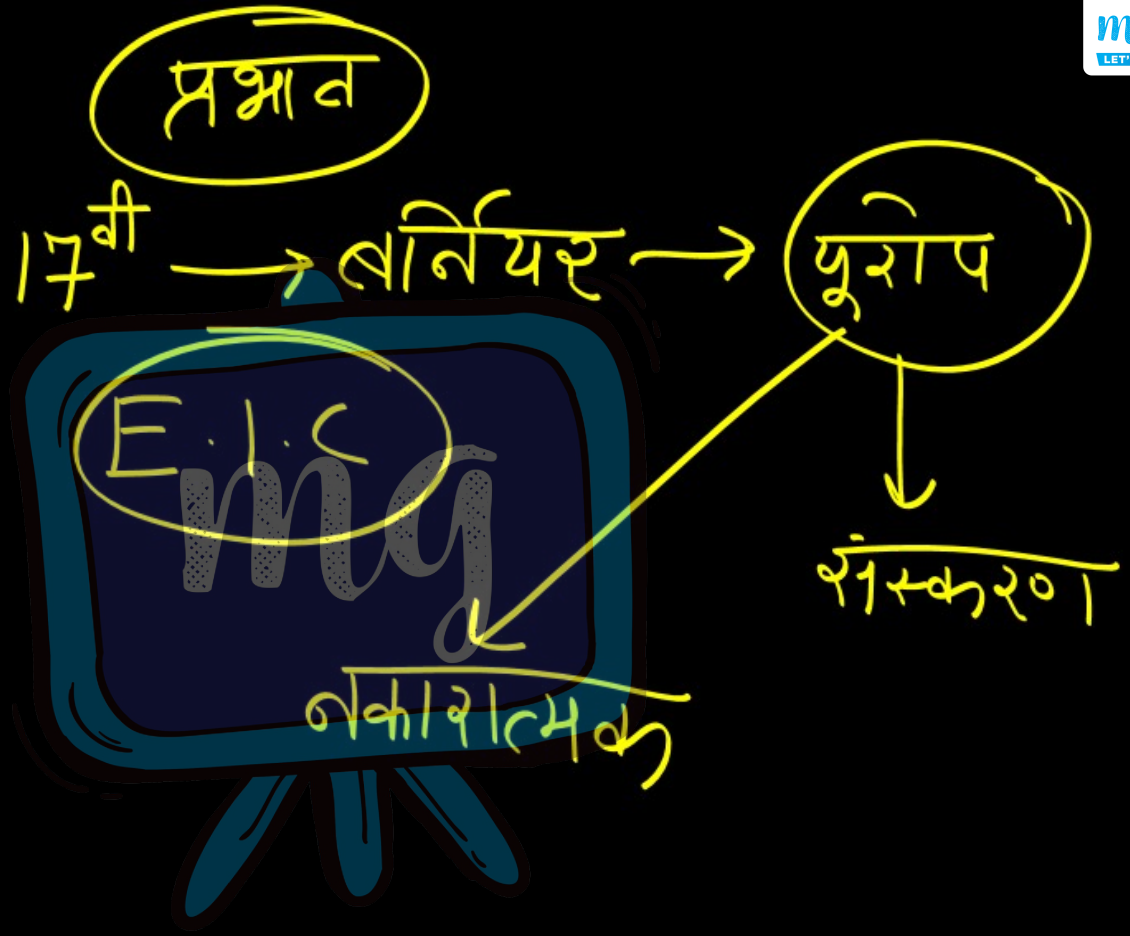
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

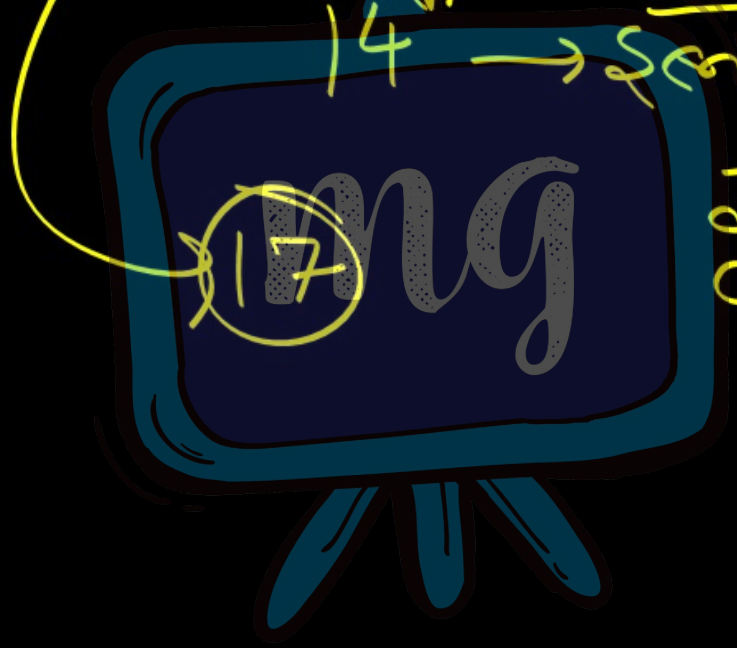
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर ✓ ✗



14वीं → इब्नबतूता

17 कवि ✓

↳ उपजा 3

↳ 2

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1498

राजा

यूरोप के लिए एक चेतावनी

बर्नियर चेतावनी देता है कि यदि यूरोपीय शासकों ने मुग़ल ढाँचे का अनुसरण किया तो :

उनके राज्य इस प्रकार अच्छी तरह से जुते और बसे हुए, इतनी अच्छी तरह से निर्मित, इतने समृद्ध, इतने सुशिष्ट तथा फूलते-फूलते नहीं रह जाएँगे जैसा कि हम उन्हें देखते हैं। दूसरी दृष्टि से हमारे शासक अमीर और शक्तिशाली हैं और हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी और बेहतर और राजसी ढंग से सेवा हो।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वे जल्द ही रेगिस्तान तथा निर्जन स्थानों के, भिखारियों तथा क्रूर लोगों के राजा बनकर रह जाएँगे जैसे कि वे जिनके विषय में मैंने वर्णन किया है। (मुग़ल शासक) ... हम उन महान शहरों और नगरों को खराब हवा के कारण न रहने योग्य अवस्था में पाएँगे, तथा विनाश की स्थिति में, जिनके जीर्णोद्धार की किसी को चिंता नहीं है, व्यक्त टीले और झाड़ियों अथवा घातक दलदल से भरे हुए खेत, जैसा कि पहले ही बताया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

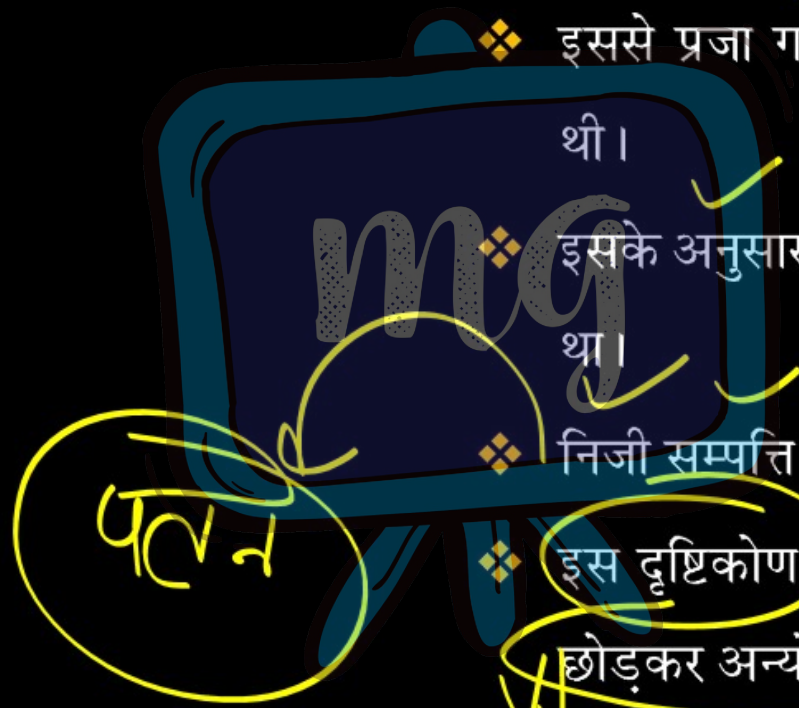
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर के विचारों का प्रभाव

- बर्नियर के विचारों से 18वीं शताब्दी में पश्चिमी विचारक भी प्रभावित हुए।
- फ्रांसीसी दार्शनिक मॉन्टेस्क्यू ने इसके वृत्तान्त का उपयोग ''प्राच्य निरंकुशवाद'' के सिद्धांत को विकसित करने में किया।
- इस सिद्धांत के अनुसार एशिया में शासक अपनी प्रजा पर निर्बाध प्रभुत्व का उपयोग करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

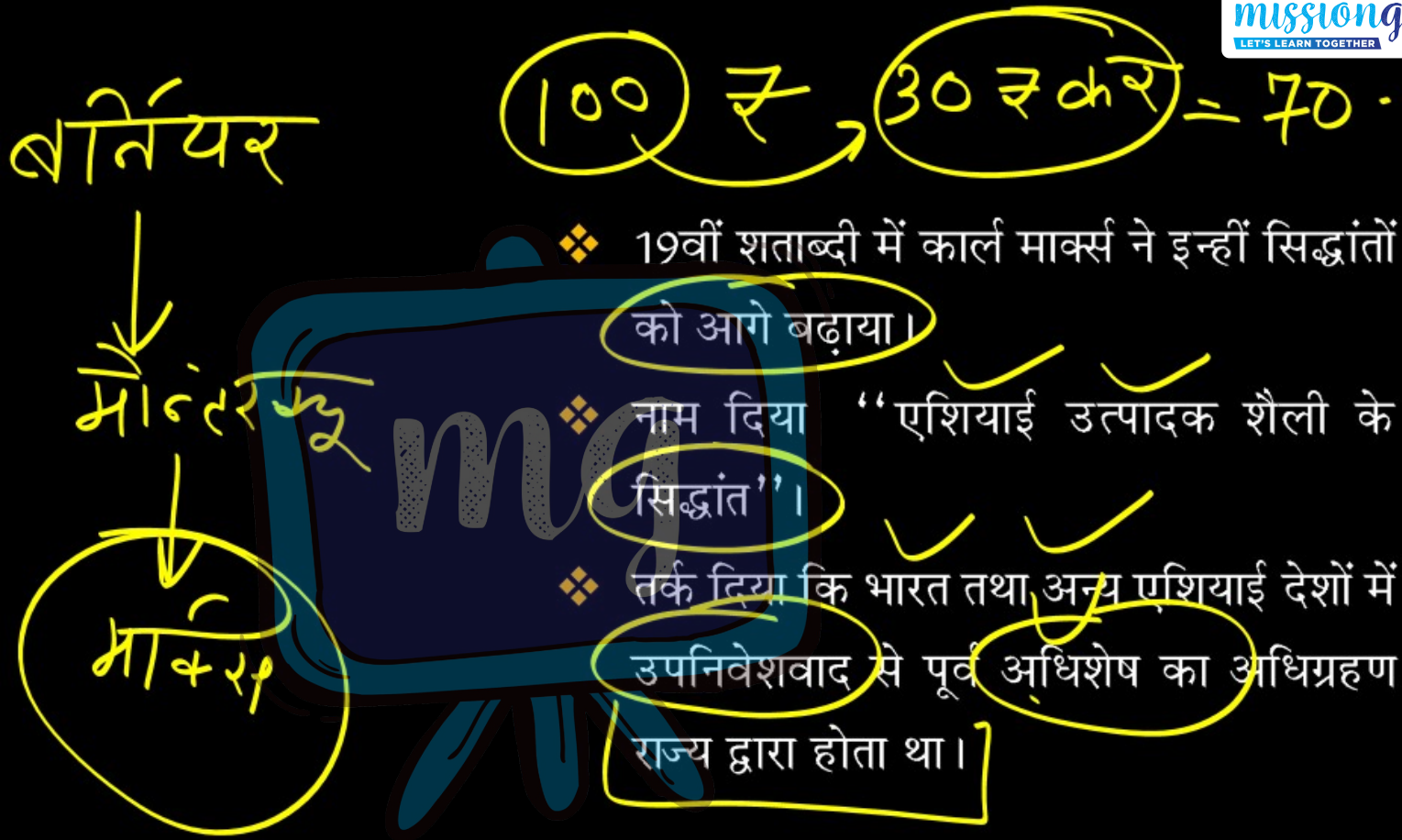
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इससे प्रजा गरीबी में तथा दास बनकर रहती थी।
- इसके अनुसार भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था।
- निजी सम्पत्ति अस्तित्व में नहीं थी।
- इस दृष्टिकोण से राजा और उसके अमीरों को छोड़कर अन्यों का जीवन यापन बहुत मुश्किल से हो पाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

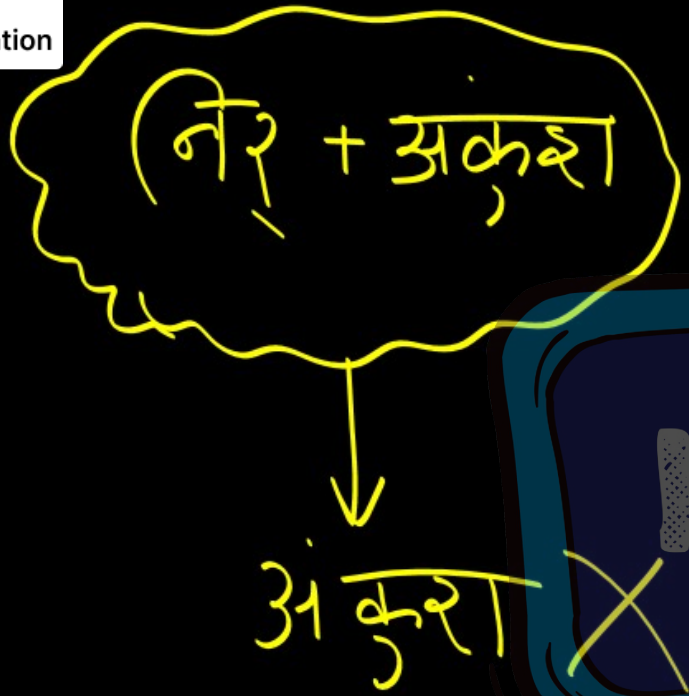
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 19वीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स ने इन्हीं सिद्धांतों को आगे बढ़ाया।
- नाम दिया "एशियाई उत्पादक शैली के सिद्धांत"।
- तर्क दिया कि भारत तथा अन्य एशियाई देशों में उपनिवेशवाद से पूर्व अधिशेष का अधिग्रहण राज्य द्वारा होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



एक अधिक जटिल सामाजिक सच्चाई :-

- बर्नियर के वर्णन में मुगल राज्य को निरंकुश दिखाने का प्रयास किया है।
- उनका विवरण जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करता है, जैसे –

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



शिल्पकारों के बारे में वर्णन किया कि :-

- उनके पास अपने उत्पादों को अच्छा बनाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था।
- क्योंकि राज्य लाभ/मुनाफे का अधिग्रहण कर लेता था इसलिए शिल्पकारों से सम्बन्धित उत्पादन पतनोन्मुख था।
- साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत में आती थी क्योंकि उत्पादों का सोने-चाँदी के बदले निर्यात होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बार्निपर के विचारों को स्पष्ट करें :

1) निजी भूमि स्वामित्व

